ISSN 2231-1629
Knowledge Resonance

IMPACT FACTOR 8.072

July – December 2021- Vol. 10 No. 2

'मोहन राकेश' तथा 'निर्मल वर्मा' की कहानियों में अकेलेपन का चित्रण

डॉ. बालाजी जोकरे

हिन्दी विभागध्यक्ष

वसंतराव नाईक महाविद्यालय, औरंगाबाद

एक महफिल में कई महफिले होती है शरीक
जिस को पास से देखोगे अकेला होगा । निदा फाजली

संचार के बढ़ते साधनों के बीच व्यक्ति का अकेलापन आधुनिक जीवन की त्रासदी बनता जा रहा है। अकेलापन आधुनिक जीवन की एक कटु सच्चाई है। यह न केवल भारत की समस्या है बल्कि संपूर्ण दुनिया इस समस्या से त्रस्त एवं पीड़ित है। अकेलापन जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है और दुर्भाग्यवश ऐसे अभिशप्त लोगों की संख्या में दिन-प्रतिदिन बढ़ोत्तरी होती जा रही है। इसमें जीवन के हर जाति, आयु, वर्ग के स्त्री-पुरुष शामिल हैं। अकेलेपन की त्रासदी भोगने वाले इस समूह में सिर्फ वे लोग नहीं हैं जो किसी कारणवश अकेले रहने को मजबूर हैं, बल्कि वे लोग भी हैं जो परिवार के साथ रहते हुए, कार्यस्थल पर भरेपूरे माहौल में एवं भीड़ के बीच भी खुद को अलग-थलग और अकेला महसूस करते हैं एवं अपने को बेहद तन्हा पाते । आज समाज 'हम' से 'मैं' हो गया है। व्यस्तताएं कुछ इस कदर बढ़ गई हैं कि मित्रों अपनी जीवनसंगिनी के साथ जीवन में स्थान बना पाना कठिन हो गया है। आज जीवन की पूरी जद्दोजहद खुद के लिए है, शेष सारे रिश्तें एवं खुशियां गौण हो गई हैं। इसी समस्या से जूझते ब्रिटेन में, इस समस्या को लेकर वहां की प्रधानमंत्री टरीजा बहूत गंभीर हैं । उनका का कहना है कि मैं अपने समाज के लिए इस समस्या का सामना करना चाहती हूं। अकेलेपन की समस्या कितनी भयावह है, इस ओर सांसद कॉक्स ने सम्पूर्ण ब्रिटेन का ध्यान खींचा था। उन्होंने एक कमिशन गठित किया था, जिसका मकसद इस समस्या का आकलन करना और इसे दूर करने के उपाय ढूंढना था। बात केवल ब्रिटेन की ही नहीं है, पूरी दुनिया और भारत भी इस समस्या से पीड़ित हैं। भारत में संयुक्त परिवारों के विघटन और एकल परिवारों के चलन ने इस समस्या को बढ़ावा मिला है।

अक्सर लोग यह सोचते हैं कि अकेलापन बुजुर्गों में पाया जाता है । हमारे देश में अकेलेपन की यह भीषण समस्या बुजुर्गों तक सीमित नहीं है, महिलाएं और युवक भी इसके शिकार हैं। करियर संवारने की कोशिश में अपने मां-बाप, भाई-बहन से दूर महानगरों में जाकर रहने वाले कई युवा भी अकेलेपन से पीड़ित एवं परेशान हैं। इस तरह भारत भी अकेलेपन की समस्या से जूझ रहा है, हिन्दी कहानिकारों ने इस अकेलेपन की समस्या का चित्रण अपनी कहानियों में किया है । मोहन राकेश तथा निर्मल वर्मा की कहानियों में अकेलापन चित्रित हुआ है ।

मोहन राकेश की कहानियों में अकेलापन प्रमुख रूप से उभरकर आया है । कारण यह कह सकते हैं कि शायद मोहन राकेश स्वयं इस पीड़ा से गुजर चुके हैं। यह उनका भोगा हुआ यथार्थ है । अपने जीवन की विसंगतियों की वजह से हमेशा वे अकेलापन का शिकार रहे । यह दर्द उनकी कहानियों में दिखाता है । वे लिखते हैं , मेरी अधिकांश कहानियाँ संबंधों की यंत्रणा को अपने अकेलेपन में झेलते लोगों की कहानियाँ हैं , यह अकेलापन समाज से कटकर जी रहे व्यक्ति का अकेलापन नहीं है , समाज के बीच होने का अकेलापन है।[1]

अकेलापन का परिचय देती मोहन राकेश की प्रमुख कहानी है 'मिसपाल' । नौकरीपेशा स्त्री के रूप में अकेलापन से पीड़ित अविवाहित नारी का चित्रण 'मिसपाल' कहानी में हुआ है । मिसपाल शारीरिक रूप से अन्य महिलाओं की अपेक्षा कम सुंदर होने के कारण उसे समाज और ऑफिस में पग - पग पर उपेक्षा ही मिलती है। बचपन से माता - पिता और परिवार के प्रेम से वंचित मिसपाल इन सब घटनाओं से आत्मकेंद्रित हो जाती है , अपने कुत्ते पिंकी के सिवाय वह किसी को अपने पास नहीं आने देती । वह अपने अकेलेपन का साथी अपनी चित्रकला व संगीत को बनती है । वह दिल्ली छोड़ना चाहती । वह वहाँ के हर व्यक्ति को घटिया समझती है । उसका यह मानना है कि इन सबसे ज्यादा सभ्य तो उसका कुत्ता पिंकी है, " मैं उन लोगों से दिल से नफरत करती हूँ । तुम इन्हें इंसान समझते हो ? मुझे तो ऐसे लोगों से अपना पिंकी ज्यादा अच्छा लगता है । यह उन सब से कहीं ज्यादा सभ्य है ।"[2] निपट अकेलेपन की वजह से मिसपाल जीवन कि सामान्य सहजताओं से अपने को असंपृतक्त और विच्छिन्न रखती है छोटी - छोटी बातों को भी अत्यंत संवेदनशीलता के साथ ग्रहण करती है 'सुहागिने' कहानी की नायिका मनोरमा आधुनिक शिक्षित नारी है । आर्थिक संकट की स्थिति में मनोरमा पति की जिम्मेदारियों को कम करने के लिए नौकरी करती है, वह एक ऐसी जगह

रहती है जहां पति और परिवार उसके साथ नहीं रहता । वह अकेले ही अपना जीवन गुजराती है तथा पैसे इकट्टे कर पति की मदत करती है । उसे पारिवारिक जीवन की कमी महसूस होती है । इस कारण वह अपने जीवन में हमेशा अपने आप को अकेला समझती है । अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए किसी का साथ चाहती है । वह अपने बच्चे के लिए तरसती है । अपनी नौकरनी काशी के बच्चों के साथ समय गुजर कर वह अपने अकेलेपन को कम करना चाहती है । मनोरमा के व्यक्तित्व के समानान्तर कहानी में उसकी नौकरनी काशी का चित्रण हुआ है जो परित्यक्ता होने के बावजूद अकेलेपन की अनुभूति से पीड़ित नहीं है । इसका कारण हैं काशी का वर्ग उसे परिवेश से कटने का अवसर नहीं देता । मनोरमा अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए अपना बच्चा चाहती है । "एक बच्चे की लालसा भी पूरा नहीं हो पाती, जैसे की मनोरमा की नियति है । अपने पति से इतना जुड़ी होकर भी वह अलग है, अलग रहने को अभिशप्त है । बिना किसी वैमनस्य या तनाव के सिर्फ एक गहरे आर्थिक दबाव के कारण अपने पति की इच्छा का सम्मान करते हुए और अलग रहते हुए, मूल संबंधों से कटकर निरंतर अकेली होती जा रही है।"[3]

'ऊर्मिल जीवन' कहानी की नायिका नीरा सत्रह वर्ष की युवती है । उसकी शादी अपनी बहन की मृत्यु के पश्चात अपने दुगुनी उम्र के जीजा से हो जाती है । जिस जीजा से वह घृणा करती थी उसी के साथ बहन की मृत्यु के कारण विवाह करना पड़ता है । इस नए रिश्ते को निभाना उसके लिए असंभाव हो जाता है । अपने जीवन में अकेलेपन का अनुभव वह करती है । 'जख्म' कहानी एक अकेले व्यक्ति की कहानी है जो अपनी जिंदगी अपने तौर पर जीना चाहता है । लेकिन अपने परिवेश में वह अपने को बिलकुल अकेला पाता है। उसके पास अपना परिवार नहीं है, वह अपने परिवेश के लिए अकेलेपन से जूझता दिखाई देती है, "तुम जाओ अपने घर उसने अपने जख्मी हाथ में लेकर हिला दिया, क्योकि तुम्हारे लिए एक ही जहां है जहाँ तुम जा सकते हो, पर जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरे लिए एक ही जगह नहीं हैं, ... मैं कहीं भी जा सकता हूँ"[4] मोहन राकेश की दोहरा, धुंधलद्वीप, लक्ष्यहीन आदि कहानियों में मनुष्य के अकेलेपन की पीड़ा का चित्रण हुआ है । निर्मल वर्मा की कहानियों में अकेलेपन की समस्या का सूक्ष्म चित्रण हुआ है । 'धनंजय वर्मा' लिखते हैं, "निर्मल वर्मा की कहानियाँ जीवन की वह अनुभूतियाँ हैं, जिन्हें एकांतिक अनुभूतियाँ कहते हैं । यह अंतर्मुखी और व्यक्तिपरक होती हैं । इन कहानियों में घटनाएँ हैं, साथ में एक मुखर चिंतन है जिसके अवलंबन से अकेलेपन की परते स्तर स्तर पर खुलती हैं ।"[5] धनंजय वर्मा लिखते हैं, "निर्मल वर्मा व्यक्ति के अकेलेपन को जीवन की त्रासदी मानते हैं । अकेलेपन उनकी कहानियों की मुख्य विषय वस्तु रही है। उनके पात्र हमेशा अकेलेपन से जूझते दिखाई देते हैं । फिर चाहे अकेलापन दांपत्य संबंधों की टूटने का हो या फिर किसी प्रिय की उदासिनता हो ।

निर्मल वर्मा की कहानी 'परिंदे' की नायिका है लतिका, जो एक पहाड़ी कस्बे में कोनवेंट स्कूल में टीचर है । वह गिरीश नेगी से प्रेम करती है जो आर्मी में है । विपरीत परिस्थिति में गिरीश की मृत्यु होती है किन्तु लतिका उसे भूल नहीं पाती और अपने जीवन में उसकी जगह किसी और को नहीं देती । वह हमेशा अतीत की स्मृतियों में खोई रहती है और अपने लिए नितांत अकेलेपन को चुनती है । जब हबर्ट उसे छुट्टियों में बाहर न जाने के बारे में पूछते हैं तो वह कहती हैं, "अब यहाँ मुझे अच्छा लगता है – पहले साल अकेलेपन कुछ अखरा था, अब आदि हो गई हूँ"[6] 'मायादर्पण ' कहानी की नायिका तरन एक भरे हुए परिवार में रहती हैं । पिता, बुआ साथके साथ रहती हैं। पिता एक रूढ़िवादी व्यक्ति हैं । पिता और तरन के भाई के बीच मतभेद होनेसे उसका भाई घर छोड़कर चला जाता है। तरन अपने पिता के साथ रहते हुए भी अकेलापन महसूस करती है वह अपने भाई के पास जाना चाहती है, लेकिन पिता को यह मंजूर नहीं है। तरन पिता और भाई को लेकर अंतर्द्वंद्व में घिर जाती है । किन्तु पिता की स्थिति देखकर निर्णय लेती है कि वह उनके साथ हमेशा के लिए रहेगी और अपने जीवन में अकेलेपन को स्वीकार कर लेगी ।"वह अकेली रहेगी किन्तु बाबू कि छाया में बंधी हुई और बाबू का अकेलापन हमेशा, ज़िंदगी भर उससे जूड कर रहेगा"[7]

'सूखा' कहानी में आधुनिक जीवन का अकेलापन दिखाई देता है । इस कहानी में अकेलापन परम सीमा पर दिखाई देता है । कहानी के नायक है डॉ. देव, जो जीवन में इतने अकेले हैं कि आत्महत्या कर लेते हैं । जब शकुन उन्हें प्रश्न पूछती है तो वे कहते हैं आप क्या सोचते हैं, सूखा सिर्फ बाहर पड़ता है । कहानी व्यक्ति के अन्तर्मन के सुख जाने को चित्रित करती है । जिस तरह सूखा पड़ने पर निर्वासित लोग अनाथ अकेले बेचैन खाली सोच में टूटे हुए रहते हैं । वही स्थिति डॉ. देव की दिखाई देती है ।

'धूप का एक टुकड़ा' कहानी की नायिका स्वयं अपने लिए अकेलापन चुनती है । उसका अपने पती से संबंध विच्छेद हो गया है और वह बगीचे में बेंच पर बैठी धूप के एक टुकड़े से अपने अकेलेपन को कम करने का प्रयास करती दिखाई देती हैं । स्वयं अकेले रहना वह सुखदाई मानती हैं वह कहती हैं, "इस लिहाज से मैं बहुत सुखी हूँ – अगर अपने अकेलेपन

को खुद चुन सके" निर्मल वर्मा – धूप का एक टुकड़ा कव्वे और कालापानी पृ 16

'सुबह की सैर' कहानी के नायक कर्नल निहालचंद सेवानिवृत्त फौजी हैं । उनकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी है और पुत्र विदेश में रहता है । वे यहाँ अपने नौकर के साथ अकेले रहते हैं, पुत्र उनसे ज्यादा बात नहीं करता । वे अपने जीवन में इतने अकेले हैं कि अपने जीवन से पूरी तरह ऊब चुके हैं । वे प्रतिदिन सुबह सैर पर निकलते हैं और शाम होते होते घर लौट आते हैं । सैर पर जाते तो वहाँ उनकी साथी थी कट्टो । कहानी के अंत में कर्नल आत्महत्या कर लेते हैं । कर्नल अकेलेपन से पीड़ित थे वे अपना अकेलापन किसी से बांटना चाहते थे लेकिन अकेलेपन की पीड़ा उन्हें आत्महत्या की स्थिति तक ले जाती है । 'लंदन' की एक रात कहानी में बेरोजगारी की वजह से अकेलापन दिखाई देता है । कहानी में मुख्य तीन पात्र हैं , जो लंदन में नौकरी की तलाश में भटकते रहते हैं तथा कथानायक और उसका मित्र एक साथ रहते हुए भी एक दूसरे की सहायता नहीं कर पाते । अकेलेपन की समस्या से हर कोई जूझ रहा है, दुर्भाग्यवश हमारे देश में भी यह समस्या जिस तेजी पांव पसार रही है, उसे देखते हुए कोई-न-कोई उपाय करना ही होगा। लेकिन हमारे यहां का नेतृत्व एवं सरकारें अभी इतनी संवेदनशील नहीं हुई हैं फिर वे कैसे इंसान के अस्तित्व एवं अस्मिता से जुड़ी इस गंभीर समस्या के लिये सोचे ? अकेलापन का शिकार वे ही व्यक्ति नहीं होते जो समाज में अकेले रहते हैं बल्कि वे भी होते हैं जो भरे पूरे परिवार में , सगे संबंधियों में और मित्रों से घिरे हुए हो फिर भी अपने आप को अकेला अनुभव करते हो । "आज की जीवनशैली ने लोगों को निराश होने की कई वजहें दी हैं। तमाम प्रतिस्पर्धाओं की वजह से, नौकरी छूटने के कारण, रिश्तों में गड़बड़ होने की वजह से आदि कई ऐसे कारण हैं जिनकी वजह से इंसान न सिर्फ निराश होता है बल्कि अच्छे दोस्तों के अभाव में खुद को बेहद अकेला भी महसूस करने लगता है।"[8] ऐसे माहौल में अकेलापन काफी खतरनाक हो सकता है। इसीलिए इंसान को हमेशा सामाजिक होने की सलाह दी जाती है ताकि कभी अगर वह मुसीबतों में फंसता भी है तो लोगों के सांत्वना भरे शब्द उसे इस हताश होने और अकेलेपन के गर्त में जाने से रोक सकते हैं।"

संदर्भ -

1. *दीप्ति परमार : मोहन राकेश की कहानियों में युगचेतना, पृ.70*
2. *अनीता राकेश : मिसपाल मोहन राकेश कि संपूर्ण कहानियाँ पृ 13*
3. *रघुवीर सिंहना : हिन्दी कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ। 64*
4. *अनीता राकेश : जख्म मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ। 418*
5. *कथाकार निर्मल वर्मा, नरेंद्र इष्टवाल , पृ 87*
6. *निर्मल वर्मा परिंदे पृ 126*
7. *निर्मल वर्मा – मायादर्पण झड़ी पृ 45*
8. *जनसत्ता – 03 oct 2017*